2

सगुण भक्तिकाव्य
(तुलसीदास, सूरदास और मीराँबाई)

सगुण का अर्थ है- गुण सहित। यहाँ पर गुण का अर्थ है-रूप और उससे जुड़ी प्रवृत्तियाँ। ईश्वर के रूप, आकार और गुणों में विश्वास करके उनका बखान करने वाली भक्ति सगुणभक्ति कहलाती है। इस भक्ति में अवतार और लीला का बहुत महत्व है। इसीलिए सगुण भक्ति के काव्य में ईश्वर के साकार रूप की लीलाओं का गायन हुआ है। प्रसिद्ध कथन है कि, 'भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाए रामानंद' अर्थात् भक्ति का उद्भव दक्षिण भारत में हुआ और इसे उत्तर भारत में रामानंद लेकर आए। रामानंद ने राम को विष्णु का अवतार मानकर उनकी उपासना आरंभ की। इसी प्रकार वल्लाभाचार्य ने कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर उनकी उपासना आरंभ की। इस तरह से रामभक्ति और कृष्णभक्ति की दो धाराएँ चल पड़ीं। तुलसीदास रामभक्ति धारा के और सूरदास कृष्णभक्ति धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। कृष्णभक्ति धारा में मीराँ का नाम भी महत्वपूर्ण है। वे सूरदास की तरह निर्गुण भक्ति की विरोधी नहीं हैं। उनके काव्य पर निर्गुण-सगुण-दोनों साधनाओं का प्रभाव है। उन पर नाथमत का भी प्रभाव दिखाई पड़ता है।

इस पाठ में हम तुलसीदास, सूरदास और मीराँ के पदों को पढ़कर समझेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- राम और भरत के आपसी संबंधों का वर्णन कर सकेंगे;
- भरत के चरित्र की विशेषताओं पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- सूरदास के वात्सल्य-भाव का अपने शब्दों में उल्लेख कर सकेंगे;
- मीराँ की कृष्ण के प्रति प्रेमभाव की साहसपूर्ण अभिव्यक्ति का उल्लेख कर सकेंगे;
- तुलसी, सूर और मीराँ के पदों के भाव-सौंदर्य एवं शिल्प-सौंदर्य का वर्णन कर सकेंगे।

टिप्पणी

(क) तुलसीदास

2.1 मूल पाठ

चित्र 2.1 : तुलसीदास

'रामायण' की कहानी से आप अवश्य परिचित होंगे। राम भारतीय संस्कृति के केंद्रबिंदु हैं। महाकवि तुलसीदास ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'रामचरितमानस' में भगवान राम को भारतीय जनमानस में स्थापित करने का महान कार्य किया है।

अवधी भाषा और चौपाई-दोहा छंद में लिखे गए 'रामचरितमानस' में राम के जीवन की कथा है जिसका लोकप्रिय रूप आपने 'रामलीला' में अवश्य देखा होगा। रामलीला में भाग लेने वाले पात्र समाज के प्रत्येक वर्ग से आते हैं। 'रामचरितमानस' एक प्रबंधकाव्य है जिसे उदात्त मानवीय संबंधों का महाकाव्य भी कहा जा सकता है। आज इस पाठ में हम राम और भरत के एक महत्वपूर्ण प्रसंग के माध्यम से भाइयों के आदर्श संबंध और प्रेम के विषय में पढ़ेंगे। 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकांड' का यह प्रसंग मार्मिक है। आइए, इस संदर्भ में यह काव्यांश पढ़ें-

भरत का भ्रातृप्रेम

('रामचरितमानस' से उद्धृत)

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई।
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू।
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही।।

दो0 महूँ सनेह सकोच बस, सनमुख कही न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि, पेम पिआसे नैन।।

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भा।।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली।।
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।

शब्दार्थ

- अनुकूल अघाई - पूर्णतः अपने पक्ष में
- नीरज नयन - कमल जैसे नेत्र
- पुलकि - रोमांचित होकर
- मुनिनाथ - वशिष्ठ
- कहब मोर - मुझे जो कहना था
- निबाहा - निभा दिया, मेरी ओर से कह दिया
- कोह - क्रोध
- सनेहू - स्नेह
- बिसेषी - विशेष
- खुनिस - रंजिश, अप्रसन्नता
- परिहरेऊँ न - नहीं छोड़ा
- जियँ जोही - हृदय में देखा है
- महूँ - मैंने भी
- कही न बैन - बात नहीं कही
- तृपित - तृप्त
- विधि - विधाता
- जननी मिस - माँ के बहाने
- बीचु पारा - अंतर पैदा कर दिया
- सुचाली - सदाचारी
- कुचाली - दुराचारी
- को भा - कौन हुआ
- फरइ - फलती है
- कोदव - कोदो (एक प्रकार का मोटा अनाज)
- सुसाली - एक प्रकार का शालि नामक धान,
- संबुक - घोंघा
- मुकता - मोती
- काहू - किसी को भी
- उदधि - सागर
- अवगाहू - अथाह

बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा।
गुरु गोसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू।।

दो0 साधु सभाँ गुर प्रभु निकट, कहउँ सुथल सतिभाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।

बोध प्रश्न 2.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'कृपा की रीति' किस विकल्प से प्रकट हो रही है –

   (क) नीरज नयन नेह जल बाढ़े

   (ख) खेलत खुनिस न कबहूँ देखी

   (ग) हारेहुँ खेल जितावहिं मोही

   (घ) लागत मोहि नीक परिनामू

2. भरत सबसे अधिक दोषी मानते हैं–

   (क) भाग्य को

   (ख) गुरु वशिष्ठ को

   (ग) कैकेयी को

   (घ) दशरथ को

2.2 आइए समझें

अंश–1

आइए, 'भरत का भ्रातृप्रेम' के प्रथम अंश को पढ़कर समझें।

प्रसंग : आप यह तो जानते ही हैं कि सीता और लक्ष्मण सहित राम के वन चले जाने पर अयोध्यावासी बड़े दुखी हुए थे। राम के छोटे भाई भरत को सबसे अधिक दुख हुआ था। बता सकते हैं क्यों ? कैकेयी ने राजा दशरथ से राम के लिए वनवास और भरत के लिए राज्याभिषेक का वरदान माँगा था। भरत के लिए यह बात अकल्पनीय थी। राजगद्दी पर तो बड़े भाई का अधिकार होता है, किंतु यहाँ उन्हें वनवास दे दिया गया। भरत अपने को इसका दोषी मानते हैं। इसलिए भरत अपने कुल-गुरु वशिष्ठ और राजपरिवार सहित

टिप्पणी

शब्दार्थ

अघ	– पाप
परिपाकू	– फल, परिणाम
काकू	– व्यंग्य
नीक	– अच्छा
हेरि	– देखकर
परिनामू	– परिणाम
सति भाऊ	– सच्चे मन से
प्रपंचु	– कपट

प्रथम अंश

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई।
गुरु साहिब अनुकूल अघाई।
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू।
कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू।
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।
नीरज नयन नेह जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा।
एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधि
हु पर कोह न काऊ।
मो पर कृपा सनेहु बिसेषी।
खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू।
कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ
खेल जितावहिं मोही।।
महूँ सनेह सकोच बस,
सनमुख कही न बैन।
दरसन तृपित न आजु लगि,
पेम पिआसे नैन।

अयोध्या के नागरिकों को साथ लेकर राम को लौटाने के लिए वन की ओर चल पड़े। तुलसी ने रामचरितमानस के अयोध्याकांड में उसी अवसर का वर्णन किया है।

व्याख्या : चित्रकूट में राम ने भरत के स्वभाव की बड़ी प्रशंसा की। उनका रुख देखकर वशिष्ठ ने भरत को संकेत दिया कि वे अपने ह्रदय की बात राम के समक्ष रखें।

चित्र 2.2 : राम भरत मिलन

यही तो भरत चाहते थे। वे ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में ही थे कि कब गुरु वशिष्ठ और राम दोनों अनुकूल हों। अवसर प्राप्त होने पर उनके शरीर में सिहरन हुई। वे सभा के समक्ष बोलने के लिए खड़े तो हुए पर बोलने से पूर्व उनकी आँखों से प्रेम के आँसू बह चले। फिर बोले– मुझे जो कहना था वह तो मुनियों में श्रेष्ठ गुरु वशिष्ठ ने स्वयं कह ही दिया है, मैं उससे अधिक क्या कहूँ? मैं अपने भाई राम के स्वभाव से बचपन से ही परिचित हूँ। मैंने उन्हें कभी भी अपराधी पर क्रोध करते नहीं देखा। और मुझ पर तो उनकी विशेष कृपा रही है। बचपन में आपस में खेलते समय भी मैंने उन्हें कभी अप्रसन्न नहीं देखा। मेरे बड़े भाई की मुझ पर सदैव इतनी अधिक कृपा रही है कि यदि मैं कभी खेल हार जाता तो भी वे मुझे जिता ही देते थे। मैंने तो बचपन से ही कभी उनका साथ नहीं छोड़ा और सदा यह पाया कि उन्होंने मेरा मन कभी नहीं दुखाया। यह राम का बड़प्पन है कि वे कभी किसी का मन नहीं तोड़ते।

क्या आप बता सकते हैं कि भरत के इस कथन के पीछे क्या अभिप्राय हो सकता है? यहाँ दो अभिप्राय प्रतीत होते हैं। एक तो यह कि वे स्पष्ट कह रहे हैं कि मैंने बचपन से ही राम का साथ कभी नहीं छोड़ा। अब इतनी दीर्घ अवधि के लिए उनका वियोग मैं कैसे सह सकता हूँ। दूसरा संकेत और भी महत्त्वपूर्ण है। वह है – *'कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू'* अर्थात् राम ने कभी भी भरत का दिल नहीं दुखाया। अत: आज भी उन्हें विश्वास है कि राम उनका मन नहीं तोड़ेंगे और उनके आग्रह पर वापस अयोध्या लौट चलेंगे।

किसी पर कृपा करने की राम की रीति भी भरत को ज्ञात है। उन्होंने उस रीति पर मनन किया है और पाया है कि वे तो हारे हुए को भी जिता देते हैं।

भरत कहते हैं कि मैंने प्रेम और संकोच के कारण उनके सामने कभी मुख नहीं खोला। शिष्टाचार की परंपरा रही है कि बड़ों के सामने उद्दंडता का व्यवहार नहीं किया जाता। बड़ों के सामने मुख खोलना उनका अनादर है, जो भरत ने कभी नहीं किया। वे तो बस राम का दर्शन ही करते रहे, किंतु दर्शनों से भी आज तक तृप्त नहीं हुए। उनकी आँखें सदा राम के प्रेम की प्यासी ही बनी रहीं।

पाठगत प्रश्न 2.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भरत ने अपने अनुकूल पाया–

   (क) कैकेयी और राम को (ख) गुरु वशिष्ठ और राम को

   (ग) गुरु वशिष्ठ और कैकेयी को (घ) अयोध्यावासियों और राम को

2. किसके नेत्र नीरज रूपी कहे गए हैं–

   (क) राम के (ख) वशिष्ठ के

   (ग) कैकेयी के (घ) भरत के

3. भारत ने राम के समक्ष मुँह क्यों नहीं खोला–

   (क) प्रेम और संकोचवश (ख) क्रोध और नाराजगीवश

   (ग) प्रेम और अपराधबोधवश (घ) प्रेम और अपमानवश

अंश - 2

अब अगले अंश को पुनः पढ़िए।

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा।
नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा।
अपनी समुझि साधु सुचि को भा।।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली।
उर अस आनत कोटि कुचाली।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता
प्रसव कि संबुक काली।।
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू।
मोर अभाग उदधि अवगाहू।
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू।
जारिउँ जायँज़जननि कहि काकू।।
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा।
एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा।
गुरु गोसाइँ साहिब सिय रामू।
लागत मोहि नीक परिनामू।।
साधु सभाँ गुर प्रभु निकट, कहउँ
सुथल सतिभाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं
मुनि रघुराउ।।

प्रसंग : यह भरत के शब्दों में राम के भ्रातृ-स्नेह की स्मृति थी, जो उन्हें बार-बार याद आ रही थी। पर भरत के मन को बीच की घटनाओं की पीड़ा भी साल रही थी। उन्हें बार-बार अपनी माँ कैकेयी की करनी भी याद आ रही थी और वे आत्मग्लानि से भर जाते थे। तुलसी ने भरत की इसी मनोदशा का वर्णन किया है।

व्याख्या : भरत का कथन अभी चल रहा है। उन्होंने राम की प्रीति का स्मरण किया, और उन्हें लगा कि विधाता उनके और राम के बीच गहरे प्रेम भाव को सहन नहीं कर सका। इसलिए उसने राम और भरत के स्नेह के बीच माता कैकेयी को उपस्थित कर मानो एक रुकावट डाल दी। भरत यह कह तो गए पर तुरंत ही उन्हें लगा कि यह कथन उन्हें शोभा नहीं देता। उन्हें ऐसा क्यों लगा होगा ? एक तो यही कि पुत्र होने के कारण माँ की निंदा करना उचित नहीं है, पर स्थिति ऐसी ही आ पड़ी है। दूसरा कारण यह भी है कि कोई अपने आपको सुजान कैसे कह सकता है। आशय यह है कि कोई यह न समझे कि भरत स्वयं को पवित्र और सज्जन मान रहे हैं। अपने मानने भर से कुछ नहीं होता, हाँ ! लोग मानें तब बात और है।

भरत कहते हैं – यह सोचना कि माँ बुरी है और मैं सदाचारी और सज्जन हूँ, ठीक नहीं है। ऐसा भाव मन में आना करोड़ों दुराचारों जैसा है। 'कोटि कुचाली' पर ध्यान दीजिए। माँ को बुरा मानने का असद् विचार वस्तुतः करोड़ों असद् विचारों जैसा बुरा है। अब आप शंका कर सकते हैं कि कैकेयी ने राम को वनवास दिलाया था, इसका समाधान भरत कैसे करेंगे। भरत के पास इसके दो कारण हैं – पहला है कैकेयी के स्वभाव की विशेषता। भरत उदाहरण देकर पूछ रहे हैं– भला कोदो के पौधे से शालिधान की बालें कैसे आएँगी। इसे दूसरी कहावत से भी कह सकते हैं– बबूल के पेड़ पर आम कैसे लगेंगे। अर्थ यह भी है कि जब माँ में ही दोष है तो मैं निर्दोष कैसे हो सकता हूँ।

भरत स्पष्ट करते हैं कि स्वप्न में भी किसी को दोष देना ठीक नहीं। किसी का रत्तीभर भी दोष नहीं है, दोष तो बस भरत के भाग्य का है। वे कहते हैं कि मेरा दुर्भाग्य अथाह सागर है। उसकी कोई सीमा नहीं। कैकेई के द्वारा राम को बनवास का वरदान माँगना मेरे ही दुर्भाग्य सागर की एक लहर है। भरत को इतने से ही संतोष नहीं होता। अपने को कोसते हुए वे आगे कहते हैं– मैंने अपने पापों का परिणाम जाने बिना ही माँ को भला-बुरा कह कर उसके मन को चोट पहुँचाई। अब मैं अपने हृदय में अपनी भलाई के उपाय ढूँढ-ढूँढ कर हार गया हूँ। कोई उपाय सूझता ही नहीं। अब तो यही कहा जा सकता है कि समर्थ गुरु निकट बैठे हैं और भाई राम तथा भाभी सीता मेरे स्वामी हैं। मुझे विश्वास है कि इस सुयोग को देखकर जो भी परिणाम होगा, वह अच्छा ही होगा।

उसी बात का और विस्तार करते हुए भरत कहते हैं कि यहाँ पर सज्जनों की सभा बैठी है, गुरु वशिष्ठ और स्वामी राम निकट बैठे हैं, यह स्थान चित्रकूट भी पवित्र तीर्थस्थल है और मैं जो कह रहा हूँ उसके पीछे भी सात्विक भाव है। मुनिवर वशिष्ठ जी और राम यह भली-भाँति जानते हैं कि मेरी बातें प्रेम से भरी हैं या छल से, झूठी हैं या सच्ची।

टिप्पणी

आइए, तुलसीदास के काव्यांश की कुछ खास बातों को भी देखें :

1. बड़ी विनम्र शैली में वाक् चातुरी (बोलने की समझदारी) की झलक देखिए–

   "मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ, अपराधिहु पर कोह न काऊ।।
   मों पर कृपा सनेहु बिसेखी ...."

   मैं राम के स्वभाव को जानता हूँ, यह कहने के लिए भरत उन्हें निज नाथ (मेरे स्वामी) कहते हैं। भाई-भाई के बीच भी बड़े भाई को स्वामी मानने का भाव है और स्वामी के स्वभाव में स्वामित्ववाला बड़प्पन या अहंकार नहीं है। अपराधी पर भी क्रोध न करना उनका स्वभाव है। यहाँ 'अपराधी' शब्द को तुलसी जानबूझ कर लाए हैं। संकेत यह है कि भरत से (उसकी माँ से) जो हुआ है वह अपराध से कम नहीं, पर राम का स्वभाव है कि अपराधी पर क्रोध न करना। इस जानकारी से ही भरत निश्चिंत नहीं कर देते, वे यह भी कहते हैं कि मुझ पर राम की विशेष कृपा रही है, अतः वे बिल्कुल क्रोध नहीं करेंगे और मुझे क्षमा कर देंगे।

2. 'रामचरितमानस' में भरत अपनी माँ को तब बहुत बुरा-भला कहते हैं, जब उन्हें ननिहाल से लौटकर अयोध्या की घटनाओं की सूचना मिलती है। वह क्रोध और आवेश तात्कालिक था। वे माँ पर बरस पड़े थे और इस प्रकार वे माँ के प्रति दुर्व्यवहार के दोषी हो गए थे। तुलसी उन्हें इस आक्षेप से मुक्त कराना चाहते हैं, इसलिए यहाँ भरत से कहलाते हैं –

सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।

3. अंतिम दोहे में भी बड़ा अर्थ-गांभीर्य है। भरत यह आश्वासन देना चाहते हैं कि उनकी बातों में छल-कपट नहीं है, वे सत्य बोल रहे हैं। प्रमाणस्वरूप स्पष्ट करना चाहते हैं कि वैसे ही सामान्य स्थितियों में भी छल या झूठ संभव नहीं फिर यहाँ तो ऐसी पाँच स्थितियाँ हैं, जिनमें झूठ बोलने का प्रश्न ही नहीं उठता, जैसे –

   1. सज्जनों की सभा
   2. कुल-गुरु वशिष्ठ की निकटता
   3. स्वामी राम और सीता का सान्निध्य
   4. चित्रकूट जैसा पावन तीर्थ
   5. भरत के मन का सात्विक भाव

   ऐसे वातावरण में सामान्यत: कोई भी झूठ नहीं बोल सकता। अत: भरत जो कह रहे हैं, उस पर अविश्वास का कोई कारण ही नहीं।

4. तुलसीदास का 'रामचरितमानस' रामकथा के माध्यम से आदर्श व्यवहार और आचरण की सीख भी देता है। इस अंश में एक ओर भाइयों के परस्पर-प्रेम की और दूसरी ओर गुरुजनों का सम्मान करने की सीख है, जो आज के संदर्भों में भी उपयुक्त और प्रासंगिक है।

पाठगत प्रश्न 2.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. भरत के अनुसार कौन-सी विशेषता राम के स्वभाव की है?
   (क) वे अपराधी पर क्रोध नहीं करते हैं।
   (ख) खेलते समय जीते हुए को भी हरा देते हैं।
   (ग) वे भरत का दिल दुखाते हैं।
   (घ) वे लक्ष्मण से अधिक प्रेम करते हैं।

2. भारत को किसका दुलार प्राप्त हुआ–
   (क) दुर्भाग्य का (ख) विधाता का

(ग) राम का (घ) वशिष्ठ का

3. पठित काव्यांश की विशेषता नहीं है-

(क) ब्रजभाषा (ख) अर्थगांभीर्य

(ग) उदाहरण का उपयोग (घ) आत्मग्लानि

2.4 भाव-सौंदर्य

आप आरंभ में पढ़ चुके हैं कि 'रामचरितमानस' मानवीय एवं पारिवारिक संबंधों का महाकाव्य है। आपने जो काव्यांश पढ़ा उसमें सभी भावों का मूल आधार भाई-भाई का प्रेम है। भारतवासी भरत जैसे भाई को आदर्श मानकर उनका उदाहरण क्यों देते हैं, यह आप समझ गए होंगे। भरत राज्य को त्याग देने योग्य मानते हैं। राम का स्नेह उनके लिए सबसे बड़ी थाती है। वे तरह-तरह से बड़े भाई राम के स्नेह और उदारता की प्रशंसा करते हैं। अपने बिछोह का कारण माँ को नहीं मानते, स्वयं को ही और भाग्य को मानते हैं। काव्यांश में इन बातों की प्रस्तुति बहुत ही सरस एवं भावपूर्ण ढंग से की गई है। गुरु वशिष्ठ, राम, भरत, कैकेयी-सभी की चरित्रगत विशेषताएँ प्रभावी ढंग से व्यक्त हुई हैं।

2.5 शिल्प-सौंदर्य

तुलसी की काव्य-कला की बानगी आप देख चुके हैं। भाव और शिल्प क्षेत्रों में वे बेजोड़ हैं। आइए यहाँ काव्य-शिल्प की दृष्टि से एक बार अवलोकन करें।

1. **अलंकारों का सहज प्रयोग :** तुलसी की कविता में भाव-वर्णन के साथ-साथ अलंकार स्वाभाविक रूप में पिरोए गए हैं, थोपे नहीं गए जैसे-

   (क) 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' - भरत के नीरज रूपी नेत्रों में स्नेह का जल बढ़ गया- रूपक और अनुप्रास का सहज सौंदर्य।

   (ख) पग-पग पर **अनुप्रास** के सहज प्रयोग में भी तुलसी सिद्धहस्त हैं; जैसे-

   - *सुनि **मुनिवचन राम रुख पाई***
   - *पुलकि **सरीर सभाँ** भए ठाढ़े*
   - ***खेलत खुनिस** न कबहूँ देखी।*

   (ग) उदाहरण/दृष्टांत - *फरई कि कोदव बालि सुसाली।*
   मुकता प्रसव कि संबुक काली।।

   (घ) रूपक - मोर अभाग उदधि अवगाहू।

2. **नाद-सौंदर्य** - मधुर वर्णों के प्रयोग से कविता में नादात्मकता भी तुलसी की कविता का प्रमुख गुण है। जैसे :

   - *सुनि मुनि वचन राम रुख पाई*

- *मातु मंदि मैं साधु सुचाली*
- *जारिउँ जायँ जननि कहि काकू*

3. **साभिप्राय प्रयोग** – तुलसी अनेक शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द का जानबूझ कर चयन करते हैं। इससे कविता में अर्थगांभीर्य भी आ गया है; जैसे–

   साधु सभाँ गुरु प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
   प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।

   उपर्युक्त दोहे में 'झूठ' न बोलने के लिए पाँच बहुत ही सबल कारण एक दोहे में पिरोए गए हैं।

4. **प्रांजल अवधी** – तुलसीदास ने मानस की रचना अवधी भाषा में की है, किंतु उनकी अवधी बहुत मधुर प्रांजल शब्दावली से युक्त है।

5. **दोहा-चौपाई छंद** – दोहा और चौपाई तुलसी के प्रिय छंद हैं। इनसे कथा-प्रवाह में सहायता मिलती है और पाठक/श्रोता रस-विभोर हो जाता है।

चौपाई के बारे में संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है। आइए, इसे समझें।

चौपाई

चौपाई एक प्रकार का मात्रिक छंद है। इसमें दो चरण होते हैं। दोनों चरणों की मात्राएँ बराबर (16-16) होती हैं। इसलिए इसे मात्रिक समछंद भी कहते हैं।

इस छंद के अंत में दो गुरु वर्णों का प्रयोग आवश्यक होता है।

III ISI IS II SS
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। = 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु
S I I I I I S I I I S S
नीरज नयन नेह जल बाढ़े।। = 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु

चौपाई छंद के प्रयोग के लिए तुलसीदास का प्रबंधकाव्य 'रामचरितमानस' और जायसी का 'पद्‌मावत' बहुत प्रसिद्ध हैं।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' कथन में कौन-से अलंकार हैं ?

   (क) उपमा और अनुप्रास (ग) रूपक और अनुप्रास
   (ख) उत्प्रेक्षा और अनुप्रास (घ) अनुप्रास और अनुप्रास

2. 'रामचरितमानस' में सबसे अधिक किस छंद का प्रयोग किया गया है ?

   (क) सवैया (ग) चौपाई
   (ख) कवित्त (घ) घनाक्षरी

(ख) सूरदास

हिंदी साहित्य में कृष्णभक्ति काव्य का विशेष महत्व है। हिंदी कवियों ने विभिन्न रूपों में कृष्ण की मनोरम लीलाओं का वर्णन किया है। उनमें सूरदास का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल की एक प्रसिद्ध उक्ति है कि, ''सूर वात्सल्य एवं शृंगार का कोना-कोना झाँक आए हैं।'' वास्तव में सूर ने बालकृष्ण के रूप-सौंदर्य एवं बाल लीलाओं का विस्तृत और सूक्ष्म चित्र प्रस्तुत करते हुए उनके लोकरंजनकारी रूप की अद्भुत छवि दिखाई है। यहाँ एक पद हम पढ़ेंगे जिसमें बालक कृष्ण के सौंदर्य को चित्रित किया गया है।

2.6 मूल पाठ

पद

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिं पिए।।
कठुला-कंठ वज्र केहरि-नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।।

चित्र 2.3 : सूरदास

शब्दार्थ

सोभित - शोभा
नवनीत - मक्खन
रेनु - धूल
मंडित - युक्त
चारु - सुंदर
कपोल - गाल
लोल - चंचल
लोचन - आँख
गोरोचन - पीले रंग का एक सुगंधित रसायन जो गाय के पित्त से निकलता है
मधुप - भौंरे
कठुला - बच्चों के गले में पहनाए जानेवाली माला
वज्र - कठोर
केहरि - सिंह
नख - नाखून
राजत - सुशोभित
रुचिर - सुंदर

बोध प्रश्न 2.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. प्रस्तुत पद में कौन-सा रस है-

   (क) वात्सल्य (ख) शृंगार

   (ग) वीर (घ) भक्ति

2. भौंरों के समूह से किसकी तुलना की गई है-

   (क) कपोल (ख) मुख

   (ग) केश (घ) लोचन

2.7 आइए समझें

आइए, सूरदास के पद को पढ़कर समझें।

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारु कपोल, लोल लोचन,
गोरोचन-तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन
मादक मधुहिं पिए।।
कठुला-कंठ वज्र केहरि-नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।।

प्रसंग : सूरदास ने इस पद में घुटनों के बल चलते बालकृष्ण के अनुपम सौंदर्य का मार्मिक एवं चित्रात्मक वर्णन किया है। सूर के इस बाल-वर्णन में स्वाभाविकता, सरलता और मनोरमता का अद्‌भुत संयोग है।

व्याख्या : सूरदासजी कहते हैं कि श्रीकृष्ण अभी बहुत छोटे हैं और नंद-यशोदा के घर के आंगन में घुटनों के बल ही चल पाते हैं। एक दिन उन्होंने ताजा निकला माखन एक हाथ में लिया और लीला करने लगे। श्रीकृष्ण के छोटे से एक हाथ में ताजा माखन शोभायमान है और वह इस माखन को लेकर घुटनों के बल चल रहे हैं। उनका शरीर धूल में लिपटा हुआ है और यह धूल भी उनके सौंदर्य को बढ़ा रही है। उनके मुँह पर दही लिपटा है मानो मुख पर दही लेप कर लिया हो। उनके गाल सुंदर तथा नेत्र चंचल हैं। ललाट पर गोरोचन, तिलक के रूप में प्रयुक्त होनेवाला एक सुगंधित पदार्थ, का तिलक लगा है। कृष्ण के बाल घुँघराले हैं। जब वे घुटनों के बल माखन लिए हुए चलते हैं तब घुँघराले बालों की लटें उनके कपोलों पर झूलने लगती हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानो भ्रमर मधुर रस का पान करके मतवाले हो गए हैं। उनके गले में पड़े कठुले व सिंहनख से उनका सौंदर्य और अधिक बढ़ गया है। सूरदास कहते हैं कि श्रीकृष्ण के इस बाल रूप के दर्शन यदि एक पल के लिए भी हो जाए तो जीवन सार्थक हो जाए। अन्यथा सौ कल्पों या युगों तक भी जीवन निरर्थक ही है अर्थात् इस रूप-सौंदर्य के दर्शन के बिना अनंतकाल तक जिया गया जीवन भी बेकार है।

चित्र 2.4 : बालकृष्ण

जब सूरदास श्रीकृष्ण के बाल रूप का बिंबात्मक चित्रण प्रारंभ करते हैं तो एक से बढ़कर एक मनोहर चित्र अंकित होते जाते हैं। इस पद में कवि ने श्रीकृष्ण का गतिशील बिंबात्मक चित्र खींचा है।

इस पद में बालक का रूप है और उसकी सुंदर चेष्टाएँ भी हैं। आप ध्यान दें तो पाएँगे कि सूरदास ने बालक कृष्ण के घुटनों के बल चलने के साथ-साथ मक्खन, धूल तथा दही से सुशोभित उनके मुख तथा शरीर, माथे के तिलक, सुंदर लटों, गले में पड़ी सिंह के नाखून की माला आदि का सुंदर विवरण दिया है।

2.7 भाव-सौंदर्य

सूर वात्सल्य रस के सम्राट हैं। वे वात्सल्य के प्रत्येक अनुभव को उकेरते चलते हैं। अपने से छोटे या बच्चे के प्रति स्नेह-भाव की अभिव्यक्ति वात्सल्य है। वात्सल्य हमारे सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। बालसुलभ लीलाएँ मन को आह्लादित करती हैं।

यहाँ आलंबन भाव श्रीकृष्ण हैं, उद्दीपन भाव श्रीकृष्ण की लीलाएँ एवं वातावरण है। आश्रय माता-पिता कवि या पाठक श्रोता हैं। अतः यहाँ वात्सल्य रस माना गया है।

2.8 शिल्प-सौंदर्य

कवि ने अनुप्रास और उत्प्रेक्षा अलंकारों की अनुपम छटा बिखेरी है। 'कपोल लोल लोचन', 'मंडित मुख', 'मनु मत्त मधुप' में अनुप्रास और 'लट लटकनि मनु.... मधुहिं पिए' में उत्प्रेक्षा अलंकार है। लगभग प्रत्येक पंक्ति में नाद-सौंदर्य भी है। ब्रजभाषा का सौंदर्य अनुपम है।

पाठगत प्रश्न 2.4

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. ''लट लटकनि मनु मत्त मधुप गन मादक मधुहिं पिए'' में कौन-से अलंकार हैं-
   (क) रूपक और उत्प्रेक्षा　　(ख) अनुप्रास और उत्प्रेक्षा
   (ग) अनुप्रास और रूपक　　(घ) उपमा और रूपक
2. प्रस्तुत पद की भाषा है-
   (क) ब्रज　　(ख) अवधी
   (ग) भोजपुरी　　(घ) मैथिली
3. प्रस्तुत पद की विशेषता नहीं है-
   (क) चित्रात्मकता　　(ख) गतिशीलता
   (ग) श्रृंगारिकता　　(घ) स्वाभाविकता

क्रियाकलाप 2.1

आपने अपने घर में या आसपास किसी बच्चे की आकर्षक हरकतों व चेष्टाओं को ध्यान से देखा होगा। ऐसे ही किसी बच्चे की चेष्टाओं का पचास शब्दों में चित्रात्मक वर्णन कीजिए।

(ग) मीराँबाई

मीराँबाई के काव्य को पढ़कर यह अनुभव होता है कि वे श्री कृष्ण की अनन्य भक्त थीं। वे कृष्णभक्ति के विभिन्न संप्रदायों में से किसी में भी विधिवत दीक्षित नहीं थीं। उनकी भक्ति 'माधुर्य भाव' की भक्ति कही जाती है। माधुर्य भाव की भक्ति के अंतर्गत भक्त और भगवान में प्रेम का संबंध होता है। मीराँबाई श्री कृष्ण के प्रेम में डूबी हुई थीं। कृष्ण को वे प्रायः गिरधर, साँवरा या प्रीतम के नाम से पुकारती हैं। मीराँ के समूचे काव्य में इस प्रेम की अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से हुई है। प्रेम में मिलन और

चित्र 2.5 : मीराबाई

विरह, दोनों ही पक्षों की सुंदर अभिव्यक्ति उनके काव्य में मिलती है। यह अभिव्यक्ति अत्यंत सीधे-सादे और सरल रूप में हुई है; जिसमें प्रेम, विश्वास और समर्पण की भावना विद्यमान है।

क्रियाकलाप 2.2

1. आपने मीराँ का कोई-न-कोई पद अवश्य ही पढ़ा अथवा सुना होगा। अपने पदों में मीराँ ने कृष्ण के अनेक नामों का प्रयोग किया है, ये नाम हैं –

   गिरधर, गोविंद, साँवरा (श्याम), हरि, कृष्ण। इनके अतिरिक्त भी आपने कृष्ण के नाम पढ़े या सुने होंगे। उन्हें लिखिए –

   ....

   ....

   ....

2. जिससे आप प्रेम करते हैं,

   (क) उसके संग अधिक-से-अधिक रहना चाहते हैं।

   (ख) उसकी पसंद-नापसंद का विशेष ध्यान रखते हैं।

   ऐसी और अनेक बातें हो सकती हैं, उन्हें यहाँ लिखिए –

   (ग) ....

   (घ) ....

   (ङ) ....

आइए, हम 'मीराँबाई की पदावली' से उद्धृत उनके एक पद का आनंद लें :

2.9 मूल पाठ

पद

माई री म्हां लियाँ गोविन्दाँ मोल ।।टेक।।
थे कह्यां छाणे म्हां कां चोड्डे, लियाँ बजन्ता ढोल।
थे कह्यां मुंहोधो म्हां कह्यां सस्तो, लिया री तराजां तोल।

शब्दार्थ

माई री – ब्रज तथा राजस्थानी का एक सामान्य संबोधन (यहाँ हे सखी!)
म्हां – मैं (ने)
थे – तुम
कह्यां – कहती हो
छाणे – छिपकर
म्हां कां – मैं कहती हूँ
चोड्डे – चौड़े में अर्थात् खुले-आम
बजंता ढोल – ढोल बजाकर, खुलेआम

शब्दार्थ

मुंहाधो	- महँगा
सस्तो	- सस्ता
तराजां तोल	- तराजू में तोलकर
तण	- तन
वारां	- वारती हूँ, न्योछावर करती हूँ
जीव	- जीवन
अमोलक	- अमूल्य
मोल	- कीमत, दाम, मूल्य
मीराँ कूं	- मीरा को
दरसण>दरसन	- दर्शन
दीज्याँ	- दीजिए
पूरब जनम	- पूर्व जन्म अर्थात् पिछला जन्म
कोल>कौल	- वचन

तण वारां म्हां जीवण वारां, वारां अमोलक मोल।
मीराँ कूं प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जनम को कोल।।

आइए पद को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लें।

प्रसंग

प्रस्तुत पद में मीराँ ने कृष्ण के साथ अपने प्रेम-संबंध की घोषणा अत्यंत साहस और दृढ़ता से की है। संभवतः राजवंश और लोक-जीवन से मिलने वाली लांछना इस पद की भूमिका में है। यद्यपि यहाँ उसका बहुत स्पष्ट उल्लेख नहीं है, पर अन्यत्र ऐसा उल्लेख मिलता है। इस पद में इस साहसपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ कृष्ण से पूर्व जन्म के संबंध का भी संकेत है।

व्याख्या

मीराँ कहती हैं कि हे सखी ! मैंने तो श्रीकृष्ण को मोल ले लिया है अर्थात् मैंने कृष्ण के साथ अपने संबंध का मूल्य भी चुकता किया है। तुम कहती हो कि मैं उनसे यह

संबंध छिपाकर रखती हूँ और मैं कहती हूँ कि मैंने खुले में ढोल बजा कर श्रीकृष्ण को मोल लिया है अर्थात् उन्हें खुले आम अपना लिया है। आशय है कि मुझे कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को गुप्त रखने की आवश्यकता नहीं है। मुझे उनसे प्रेम है और मैं सार्वजनिक तौर पर इस प्रेम की घोषणा करती हूँ। मीराँ आगे कहती हैं कि हे सखी, तुम कहती हो कि यह सौदा मँहगा है पर मेरा मानना है कि यह बहुत सस्ता है; क्योंकि मैंने यह सौदा तराजू पर तौलकर किया है अर्थात् मैंने पूर्ण रूप से सोच-विचार कर, जाँच-परख कर ही ऐसा किया है और इसका जो मूल्य मैंने चुकाया है (लोक अपवाद, कुल-संबंधियों से मिलने वाली भर्त्सना और लांछना आदि) वह तुम्हारी दृष्टि में अधिक हो सकता है, पर मेरी दृष्टि में श्रीकृष्ण को पाने के लाभ की तुलना में अपयश बहुत कम है। मैंने तो उन पर अपना तन-मन और जीवन सभी कुछ न्योछावर कर दिया है अर्थात् मैं अपने इस अमूल्य सौदे यानी श्रीकृष्ण से प्रेम-संबंध पर स्वयं न्योछावर हूँ। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि मैंने अपना सब कुछ, जो अमूल्य था, कीमत के रूप में श्रीकृष्ण पर न्योछावर कर दिया। इसके बाद मीराँ पूर्व जन्म में दिए गए वचन का स्मरण कराते हुए श्रीकृष्ण से दर्शन देने की प्रार्थना करती हैं।

चित्र 2.6 : कृष्ण और मीरा

टिप्पणी

1. आइए इस पद की पहली पंक्ति *'माई री म्हा लियां गोविन्दाँ मोल'*, पर विचार करें। इसका एक अर्थ यह भी लगाया जाता है – कि हे सखी! मैंने श्रीकृष्ण को मोल ले लिया है और अब उन पर मेरा पूर्ण अधिकार है। किंतु यह अर्थ ग्रहण करने पर आगे की पंक्तियों से भाव का सामंजस्य नहीं बैठता। हालाँकि प्रेम में पूर्ण अधिकार के भाव की अभिव्यक्ति भी साहित्य में मिलती है, उदाहरण के लिए कबीर का यह दोहा देखें–

   नैनां अन्तरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेउँ।
   ना हौं देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देउँ।।

   ब्रजभाषा में 'मैं' के लिए 'हौं' का प्रयोग होता है, 'देखौं' मतलब है देखूँगा तथा 'देउँ', का अर्थ है 'दूँगा'। मीराँ के इस पद में यह भाव नहीं है। मीराँ के अन्य पदों में भी प्राय: यह भाव नहीं मिलता जैसा कि आपने देखा होगा, वे यह अधिकार अपने प्रियतम को ही देती हैं।

2. आपने ध्यान दिया होगा कि प्रस्तुत पद की अंतिम पंक्ति में दर्शन की अभिलाषा है। भक्ति और प्रेम में यह अभिलाषा निरंतर बनी रहती है। समूचे भक्ति साहित्य में ऐसी बहुत-सी उक्तियाँ मिलती हैं।

3. इसी पंक्ति में मीराँ ने श्रीकृष्ण को पूर्व जन्म में दिए गए वचन का स्मरण कराया है। पूर्व जन्म के साथ का ज़िक्र मीराँ के अनेक पदों में मिलता है। यहाँ मीराँ ने इस जन्म में दर्शन देने के श्रीकृष्ण के वचन की याद दिलाई है।

4. अगर आप इस पद की पहली तीन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ेंगे तो आपके समक्ष यह स्पष्ट हो जाएगा कि इनमें लोक-प्रचलित मुहावरों का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया गया है, ये मुहावरे हैं – मोल लेना, ढोल बजा कर लेना, तराजू में तोल कर लेना।

पाठगत प्रश्न 2.5

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. प्रस्तुत पद किसे संबोधित हैं–

   (क) राणा को　　(ख) माँ को

   (ग) स्वयं को　　(घ) सखी को

2. प्रस्तुत पद में किसे मोल लेने की बात कही गई है–

   (क) कृष्ण को　　(ख) जीवन को

   (ग) दर्शन को　　(घ) पूर्व जन्म को

3. मीराँ श्रीकृष्ण पर अपना तन और जीवन न्योछावर करती हैं, क्योंकि–

   (क) वे सखी को चिढ़ाना चाहती हैं।

(ख) वे कृष्ण को वचन दे चुकी हैं।

(ग) उन्होंने कृष्ण को मोल ले लिया है।

(घ) उनका मन समाज से त्रस्त है।

4. मीराँ श्रीकृष्ण से दर्शन देने के लिए कहती हैं, क्योंकि–

(क) अब जैसे कृष्ण चाहते हैं, वे वैसे ही रहती हैं।

(ख) अब वे कृष्ण को मोल ले चुकी हैं।

(ग) वे मंदिर में उनके दर्शन नहीं कर पातीं।

(घ) कृष्ण ने पिछले जन्म में उन्हें दर्शन देने का वचन दिया था।

5. प्रस्तुत पद की एक विशेषता नहीं है–

(क) दृढ़ता

(ख) मुहावरों का प्रयोग

(ग) प्रेम को छिपाना

(घ) माधुर्य भाव

2.10 भाव-सौंदर्य

आपने मीराँबाई के पद को पढ़ा, समझा और उसका आनंद लिया। इस पद में मीराँ ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम और भक्ति का सुंदर निरूपण किया है। प्रियतम श्रीकृष्ण की बाँकी छवि उनके मन-मस्तिष्क में गहरे पैठ गई है – इतने गहरे कि वे अपने अस्तित्व के बोध को भी खो बैठी हैं। वे प्रेम की इस अनुभूति को इस प्रकार से सँजोए रखना चाहती हैं कि पूर्ण रूप से स्वयं को इस प्रेम के प्रति समर्पित कर देती हैं। चाहे लोक-अपवाद मिले या परिवार और राजसत्ता की ओर से यातनाएँ – वे अपने प्रेम की शक्ति से सबको परास्त कर देती हैं, किसी की चिंता नहीं करतीं। उनके इस पद में गहरा आत्मविश्वास और दृढ़ता है। व्यक्तिगत जीवन-अनुभवों से प्राप्त अनुभूति की तीव्रता उनके काव्य का निजी वैशिष्ट्य है, जो मध्यकालीन साहित्य में कम देखने को मिलता है। यद्यपि संत-काव्य में अनुभूति की गहनता मिलती है पर वह कहीं-कहीं है, जबकि मीराँ के समूचे काव्य में अनुभूति की तीव्रता और सघनता पाई जाती है।

भक्तिकाव्य में मीराँ एक अलग व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं। उनके काव्य का अधययन करने वाले, उन्हें कभी संतकाव्य की परंपरा में रखते हैं, कभी महाप्रभु वल्लभाचार्य की पुष्टिमार्गी परंपरा में। मीराँ में कभी चैतन्य महाप्रभु की माधुर्य भाव की भक्ति की परंपरा दिखाई देती है, तो कभी सूफी काव्य-परंपरा से भाव-साम्य भी देखा जा सकता है, पर सत्य यह है कि मीराँ इन सभी परंपराओं से अलग अपनी छाप छोड़ती है। पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में वैयक्तिक अनुभूतियों की ऐसी अभिव्यंजना वास्तव में अनूठी है। यह परंपरा आगे अधिक ठोस रूप में घनानंद तथा छायावाद के कवियों में ही मिलती है। इस रूप में मीराँ के काव्य को प्रवृत्ति स्थापक (Trend Setter) भी माना जा सकता है।

टिप्पणी

2.11 शिल्प-सौंदर्य

काव्य-रूप की दृष्टि से मीराँ का काव्य गीतिकाव्य के अंतर्गत आता है। अनुभूति की तीव्रता और सघनता प्राय: गीतिकाव्य में ही व्यक्त होती है। गीतिकाव्य के आवश्यक तत्त्व हैं – भावानुभूति, वैयक्तिकता, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता तथा शैली की कोमलता।

पहले दो तत्त्व वे तत्त्व हैं जो गीत या गाने से गीतिकाव्य को अलग करते हैं। मीराँ के काव्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मीराँ ने संभवत: संगीत और नृत्य की भी शिक्षा पायी थी। पदावली में संगृहीत उनके पद लगभग सत्तर भिन्न रागों में निबद्ध हैं। उन्हें 'पीलू राग' अत्यंत प्रिय है। यद्यपि कृष्ण भक्तिकाव्य में प्राय: राग निबद्ध रचनाएँ मिलती हैं, पर मीराँ के काव्य में राग-रागनियों का विशेष महत्त्व है। आत्मानुभूति की प्रमुखता के कारण संक्षिप्तता उनके यहाँ सायास नहीं लाई जाती है, न ही वे किसी तरह खींच-खाँच कर आवश्यक पंक्तियाँ जुटाती हैं। उनका पद चार पंक्तियों में भी सिमट जाता हैं, तो कभी-कभी भावानुकूल विस्तार भी ग्रहण कर लेता है। उनकी शैली तो कोमल है ही। इस प्रकार वे गीतिकाव्य की सभी आवश्यकताओं का सुंदर निर्वाह करती हैं।

मीराँ ने न तो रस, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि बिंब, प्रतीक, अप्रस्तुत योजना, अन्योक्ति आदि का चमत्कार प्रस्तुत किया है और न ही वे भाव तथा विचारगत शब्दावली के जाल में उलझती हैं। वे तो अत्यंत सहज ढंग से साधारण भाषा में अपने हृदय की बात रखती हैं। उनका शिल्पगत सौंदर्य उनकी भावानुभूति की तीव्रता से ही अपना आकार ग्रहण करता है। तथापि आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने मीराँ पदावली में पंद्रह प्रकार के छंदों तथा रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा उदाहरण, विभावना, स्वभावोक्ति, अर्थांतरन्यास, श्लेष, वीप्सा आदि अलंकारों को रेखांकित किया है।

मीराँ की भाषा मूलत: ब्रजभाषा है, जिसमें राजस्थानी तथा गुजराती के शब्दों की प्रचुरता भी है। खड़ी बोली के पूर्व रूप को भी मीराँ के काव्य में यत्र-तत्र देखा जा सकता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

खड़ी बोली

1. *पिव मेरा मैं पीव की*
2. *जोगी मत जा, मत जा, मत जा*
3. *ऐसे वर का क्या करूँ जो जनमे और मर जाय।*
4. *हँस कर निकट बुलावे*
5. *देश विदेश संदेश न पहुँचे।*
6. *सुरत की कछनी काछूँगी।*

राजस्थानी – *'मेरी उणकी प्रीति पुराणी उण बिन पल न रहाऊँ।'*

ब्रजभाषा – *'पंक्तियाँ मैं कैसे लिखूँ लिख्यो री न जाए।'*

पाठगत प्रश्न 2.6

1. मीराँ की काव्य रचना किस संप्रदाय से जुड़ी हुई थी-

   (क) ज्ञानमार्गी साधना
   (ख) सूफ़ी काव्यधारा
   (ग) वल्लभाचार्य का पुष्टि मार्ग
   (घ) उपर्युक्त में किसी से नहीं।

2. मीराँ की भाषा में अभाव है -

   (क) चित्रात्मकता का
   (ख) नाद सौंदर्य का
   (ग) क्लिष्टता का
   (घ) बिंब का।

2.12 आपने क्या सीखा

सगुण भक्ति काव्य

तुलसीदास

भाव-सौंदर्य

- भाई-भाई के प्रेम का आदर्श
- राम का छोटों का प्रति स्नेह
- भरत की चरित्रगत विशेषताएँ

शिल्प-सौंदर्य

- रूपक, उपमा और अनुप्रास
- नाद-सौंदर्य
- शब्दों का सार्थक प्रयोग
- अवधी भाषा, दोहा-चौपाई छंद

सूरदास

भाव-सौंदर्य

- बालकृष्ण का चित्रात्मक वर्णन
- वात्सल्य रस

शिल्प-सौंदर्य

- उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास अलंकार
- ब्रजभाषा

मीराँबाई

- **भाव-सौंदर्य**
- कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेमभाव, माधुर्य भाव
- आत्मविश्वास एवं दृढ़ता
- अनुभूति की तीव्रता एवं सघनता

शिल्प-सौंदर्य

- गीतिकाव्य
- राग-रागनियाँ
- भाषा की सहजता
- राजस्थानी, गुजराती के शब्दों से युक्त ब्रजभाषा

2.13 सीखने के प्रतिफल

- सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा-संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य की परंपरा की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।

- परिवेश से हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं को भी सीखते हैं एवं भारतीय भाषाओं के आपसी संबंधों को भी समझते हैं।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं को पढ़ते हुए उनके सौंदर्य पक्ष एवं व्याकरणिक संरचनाओं पर चर्चा करते हैं।

2.14 योग्यता-विस्तार

तुलसीदास

तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के राम-भक्त कवि हैं। उनका जन्म संवत् 1589 (1532 ई.) में उत्तर प्रदेश के सोरों नामक स्थान में हुआ। कहा जाता है कि उनका प्रारंभिक जीवन बड़ी कठिनाइयों में बीता। बाबा नरहरिदास के वे शिष्य थे और उन्हीं से रामकथा में दीक्षित हुए।

तुलसीदास के लिखे हुए छोटे-बड़े बारह ग्रंथों का उल्लेख आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है। इनमें प्रमुख हैं - दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरितमानस और विनयपत्रिका। सभी रचनाओं में भावों की विविधता तुलसी की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के आदर्शों को जनता के सामने रखा। तुलसी की भक्ति-भावना सीधी और सरल है। राम उनके आदर्श हैं और मर्यादा पुरुष हैं। 'रामचरितमानस' में तुलसी ने राम और शिव दोनों को एक-दूसरे का भक्त दिखाकर वैष्णवों और शैवों में समन्वय करने का प्रयास किया। रामकथा को लेकर संस्कृत और हिंदी में अनेक रचनाएँ हैं, परंतु भरत का जो रूप तुलसी ने दिखाया है, वह 'रघुवंश' या 'वाल्मीकि रामायण' में भी नहीं है।

भावों की विविधता के साथ-साथ तुलसी की शैली में भी विविधता है। सूरदास की पद्ध -शैली, चारणों की छप्पय, कवित्त, सवैया पद्धति, दोहा-नीतिकाव्यों की भक्ति-पद्धति और प्रेमाख्यानों की दोहा-चौपाई पद्धति आदि का सफल प्रयोग तुलसी ने किया है। तुलसी ने अपने समय की दोनों साहित्यिक भाषाओं- अवधी और ब्रज का प्रयोग किया। मानस के अतिरिक्त अधिकांश रचनाओं की भाषा ब्रज है, जिस पर तुलसी का अद्भुत अधिकार है।

सूरदास

हिंदी साहित्य में सगुण भक्ति के अंतर्गत कृष्ण भक्तिधारा के श्रेष्ठ कवि सूरदास हैं। उनका जन्मकाल 1478 ई. में दिल्ली के पास माना जाता है। उनके जन्मांध होने या बाद में अंधत्व प्राप्त करने के विषय में अनेक मत हैं। सूरदास वल्लभाचार्यजी के शिष्य थे और पुष्टिमार्गीय परंपरा के कवि थे। उनका निधन 1583 ई. में माना जाता है।

उनकी अनेक रचनाओं का उल्लेख मिलता है परंतु 'सूरसागर' और 'साहित्यलहरी' उनकी श्रेष्ठ कृतियाँ हैं। सूर-काव्य का मुख्य विषय कृष्णभक्ति है। उन्होंने श्रीकृष्ण की

वाल्यावस्था और युवावस्था की अनेक लीलाओं का वर्णन किया है। उनकी रचनाओं की विशेषता को प्रकट करते हुए लिखा गया है कि, 'सूर वात्सल्य और शृंगार का कोना-कोना झाँक आए हैं।'

विषयवस्तु की दृष्टि से सूर के संपूर्ण काव्य को छह भागों में विभक्त किया जा सकता हैं- (क) विनय के पद (ख) बालक कृष्ण से संबंधित मनोवैज्ञानिक पद (ग) कृष्ण की रूप माधुरी संबंधी पद (घ) श्रीकृष्ण और राधा के रति-भाग संबंधी पद (द) मुरली संबंधी पद और (च) वियोग-शृंगार संबंधी भ्रमरगीत वाले पद।

सूरदास को ब्रजभाषा का महान कवि माना जाता है। उन्होंने विभिन्न शैलियों में रचनाएँ लिखीं।

मीराँबाई

मीराँ के काव्य का अध्ययन करते समय हमने देखा कि मीराँ ने अपने पदों में निजी जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति की है किंतु यह विचित्र संयोग है कि न तो मीराँ के काव्य से उनके जन्म, जीवन-काल और माता, पिता, पति आदि के विषय में कोई प्रामाणिक जानकारी मिलती है और न ही किसी अन्य स्रोत से। उपलब्ध जानकारियों के अनुसार पंद्रहवीं या सोलहवीं शती में जन्मी मीराँ का मायका मेड़ता में था तथा ससुराल मेवाड़ के प्रसिद्ध राजवंश में। ऐसा कहा जाता है कि बचपन में ही माता ने श्री गिरधर की मूर्ति को उनका पति बता दिया था, तभी से मीराँ श्रीकृष्ण को अपना पति मानने लगीं और उनके विवाह के बाद भी यह क्रम चलता रहा। मीराँ निर्भीक, साहसी और दृढ़ विचारों वाली थीं। स्वयं द्वारा चुने गए मार्ग और विचारों की सत्यता के प्रति आश्वस्त मीराँ समस्त विघ्न और बाधाओं का डटकर सामना करती थीं। उन्हें जीवन में कभी भी हताशा या निराशा नहीं हुई।

यद्यपि मीराँ द्वारा रचित कई काव्य-कृतियों का उल्लेख किया जाता है, पर उनके जीवन-वृत्त की भाँति मीराँबाई की पदावली में संगृहीत पदों के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। यूँ मीराँ की पदावली का संपादन कई लोगों ने किया है, पर आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'मीराँबाई की पदावली' सर्वाधिक प्रामाणिक संग्रह है। इसकी भूमिका में आचार्य जी ने मीराँ के जीवन तथा उनके काव्य पर भी विस्तार से विचार प्रस्तुत किए हैं। इसके अतिरिक्त नरोत्तम स्वामी की पुस्तक 'मीराँ मंदाकिनी' भी उल्लेखनीय है। मीराँबाई के जीवन और उनके काव्य पर विचार तथा विश्लेषण की दृष्टि से बंगीय हिंदी परिषद् द्वारा प्रकाशित 'मीराँ स्मृति ग्रंथ' का भी विशेष महत्त्व है। मीराँ के काव्य की उत्कृष्टता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि उनके पद हिंदी भाषी प्रदेशों के अतिरिक्त गुजरात, बंगाल तथा उड़ीसा आदि प्रांतों में भी अत्यंत श्रद्धा के साथ गाए जाते हैं।

2.15 पाठांत प्रश्न

1. 'बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा'- भरत द्वारा यह कहने का क्या कारण है?

2. "राम और भरत का प्रेम अद्वितीय है-" पद के आधार पर उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।
3. माँ के प्रति भरत का आक्रोश क्यों था स्पष्ट कीजिए?
4. पठित पद के आधार पर तुलसी के काव्य-सौंदर्य की दो विशेषताएँ सोदाहरण लिखिए।
5. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित प्रमुख अलंकारों का उल्लेख कीजिए :

   (क) नीरज नयन नेह जल बाढ़े

   (ख) मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।।
   फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।।
6. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

   (क) पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े।
   कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
7. कृष्ण के बाल रूप का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
8. सूरदास के पठित पद के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी लिखिए।
9. मीराँ के पद में कृष्ण-प्रेम की अभिव्यक्ति किस रूप में हुई है प्रस्तुत कीजिए?
10. मीराँ के पद में उनके व्यक्तित्व की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
11. मीराँ की भाषा की दो विशेषताएँ उदाहरण सहित लिखिए।
12. निम्नलिखित पद की संप्रसंग व्याख्या कीजिए-

    माई री म्हां लियां गोविन्दाँ मोल ।।टेक।।
    थे कह्यां छाणे म्हां कां चोड्डे, लिया बजन्ता ढोल।
    थे कह्यां मुंहोघो म्हां कह्यां सस्तो, लिया री तराजां तोल।
    तण वारां म्हां जीवण वांरां, वारां अमोलक मोल।
    मीराँ कूं प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जणम को कोल।।

2.16 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न 2.1

1. (ग) 2. (क)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

2.1 1. (ख) 2. (घ) 3. (क)

2.2 1. (क) 2. (ग) 3. (क)

2.3 1. (ग) 2. (ग)

बोध-प्रश्न 2.2

1. (क) 2. (ग)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

2.4 1. (ख) 2. (क) 3. (ग)

पाठगत प्रश्न के उत्तर

2.5 1. (घ) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

2.6 1. (ग) 2. (ग)